

①

॥ ओ॥ १॥ २२ ॥

॥ श्रीरामविजयदाविंशतिध्यायप्रारंभ ॥



(2)

॥ श्रीराम ॥

॥ १ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ उक्तेनिकमब्धे द्वौ च पत्र ॥ वाचिता जालासै मित्र ॥ सावध बैकै राजि
 वनेत्र ॥ सुर्यपुत्रादिकपि सर्वे ॥ १ ॥ अनंतकोटि ब्रह्मांडनायका ॥ हेद्वार्षावविश्वव्यापका
 ॥ वैकुण्ठपतिसुखदायका ॥ प्राणप्रिया श्रीरामा ॥ २ ॥ हेरामबंधच्छेदका ॥ हेरामसाधुजन
 पाकका ॥ दुष्टरजनिचरसंकारका ॥ जानकिनायका जगद्गुरु ॥ ३ ॥ रामजगद्गुरुमु
 क्तकंदा ॥ साधुहृदयारविंदमिहिरदा ॥ निजजनचालका जलदा ॥ ब्रह्मानंदपरास
 रा ॥ ४ ॥ संसारगजविदारक मृगेद्रा ॥ दुःखपर्वतमंजनेव जधरा ॥ निजभक्तरक्ष
 क सुधारसकरा ॥ अलिउदारा शितायका ॥ ५ ॥ त्रिभुवनजनका दुःखहारणा ॥ जनकजासा
 ता जनपाकणा ॥ जनकजापति जलजनयना ॥ जलद्वर्णा जगत्पति ॥ ६ ॥ जयरामवेदो
 धारका ॥ कमठरुपा शृष्टिपाकका ॥ नमो सकळवेदात्मका ॥ वराहवेशादिनबंधु ॥ ७ ॥ न
 मेंहिरप्यकश्यपमर्दना ॥ नमो त्रिविक्रमबळिवंधना ॥ नमो ब्राह्मणकुळपाकणा ॥

॥ विजय ॥

॥ १ ॥

(2A)

भार्गवकुलदिनकरा ॥ ५ ॥ नमो पैतृस्त्रिकुलवनदहना ॥ मिनकेतनारिहृदयजिवना ॥
 नमो चतुर्दशलोकपाठना ॥ मन्मथरक्षणारघुविरा ॥ ९ ॥ जयजयविश्वपाठना ॥ विश्व
 व्यापकविश्वकारणा ॥ विश्वमतिचातकविश्वजिवना ॥ विश्वरक्षणाविश्वेशा ॥ १० ॥
 नमो मायाचक्रवाटका ॥ नमो भजानतिमिरंतका ॥ नमो वेदरुपावेदपाठका ॥ वे
 दरुपावेदवेदवेद ॥ ११ ॥ नमो कमलनाभाकमलजिवना ॥ नमो पापारण्यकु
 ठारनिक्षणा ॥ नमो त्रिविधतापशमना ॥ अनंतशयना अनंता ॥ १२ ॥ नमो दशज
 वतारचरित्रचाटका ॥ नमो अनंतवेशकारका ॥ नमो अनंतब्रह्माडनायका ॥ ता
 रिक्तोत्तकापापहारणा ॥ १३ ॥ नमो स्वर्गस्थितिकारका ॥ नमो कैवल्यदायका ॥
 भजभजितसर्वात्मका ॥ करुणा लयासुरवाब्धि ॥ १४ ॥ नमो जननमरणरोग
 वेद्या ॥ सच्चिदानंदसर्वसाद्या ॥ मायालिताजगद्वंद्या ॥ मेदाभेदातिततुं ॥ १५ ॥

(3)

॥ श्रीराम ॥

॥ २ ॥

जयजयषड्जीकाररहिता ॥ नमोपद्रुणबाकंछत ॥ अरिषड्वर्गद्वंद्वप्रतापवंता ॥
शब्दतितानिरंजना ॥ १६ ॥ तुंनिर्विकारनिरंजना ॥ आह्वातगिजातशिसुगुण
॥ वेदिचेसोडवावेसुरगण ॥ पिशितासबवधोनिया ॥ १७ ॥ पित्रुवचनाचेंकरनया
ज ॥ वनाशिबालशितुंरघुराज ॥ पंचवटिसराहुनसहज ॥ बहुतराक्षसवधि ॥ विजय ॥
यले ॥ १८ ॥ दशमुखेवेंकेलेंशिताहरण ॥ त्याचेंकरावयाकंदन ॥ ह्मणेनिक्किस्किदे
सबागमन ॥ जालेंतुसंरामचंद्रा ॥ १९ ॥ मुष्टिलगिनद्रावतार ॥ अंजलिहृद
यारविदम्भमर ॥ ज्ञायाब्रह्मांडासदेणारधिर ॥ तरलासागरनिमिष्याथ ॥ २० ॥ ॥ २ ॥
अगाधमारुतिचेंउज्जाण ॥ बहुतेवाटसकलेंविघ्न ॥ परितेअनिवारकिराण
॥ कोणार्सहिनाटोपे ॥ २१ ॥ पुढेंतुंकेसयउनहुनुमेंत ॥ राक्षससंकरिलेव
हुत ॥ प्रवेशलाकोचेचेमुखान्त ॥ हांलादांतमेळविजो ॥ २२ ॥ उदरफोडुनआतावाहेर ॥

मगशोधिलें निकुं वळ नगर ॥ सुलोचना देखो न सुंदर ॥ ह्मणें ह्मच होईल जानिकी ॥
 ॥ २३ ॥ तिवरि धाला वया पाषाण ॥ सिध्य जाला वायु नंदन ॥ मग त्याचे शब्द ऐकतां
 ॥ पूर्ण ॥ शिशा न देऊ कळलें ॥ २४ ॥ मंगल पुत्र माण होउन ॥ विटें विलें सकळ ज
 न ॥ प्रवेश लालें कागुवन ॥ करुन नग विदिशि ॥ २५ ॥ पत्र ऐकतां जनक जाप
 ति ॥ ह्मणें धन्य धन्य विरमासति ॥ अहो कर्तव्य जगाय किर्ति ॥ त्रिजगति जै
 सा नाहि ॥ २६ ॥ अकेंनियां विनोद रति ॥ वाळरगदगदां हांसति ॥ येका वरि
 यक पडति ॥ मुरकुंड्या वळति अकेंनियां ॥ २७ ॥ नाना वस्तु उतम जाणुन ॥
 वाळरटा किति वावाळुन ॥ यक सप्रेम हृदई धरुन ॥ ह्मणति धन्य वळाढ्य तुं
 ॥ २८ ॥ पत्र वाचि उन्मिळ जिवन ॥ क्षण क्षणा करि हांस्य वरुन ॥ मागुति तर
 लस जाले हरि गण ॥ पत्र पुढें परिसावया ॥ २९ ॥ शोधिलें विमिषणांचें धर ॥

॥ श्रीराम ॥

॥ ३ ॥

(५)

किर्तनजैकोनजालनिर्भर ॥ मगकुंभकर्णचैमंदिर ॥ देखोनियांकुंटाळता ॥ ३० ॥
रावणाच्यास्त्रियाजेशिसहस्र ॥ तिनक्यासाधुनवायुकुभर ॥ राक्षससभवि
टंबिलिसमग्र ॥ अगाधचरित्रनवर्णवं ॥ ३१ ॥ रावणाचेजेवरिमंदोदरी ॥
ह्मणहचहोईलशितासुंदरि ॥ सोतेजालिद्यानरि ॥ दुष्टस्वनेदेखोनियां ॥
॥ ३२ ॥ दशकुंडलशिसंगवर्तमान ॥ विश्वकुंडलसप्रियरघुनंदन ॥ त्याचि
शिताच्यविसोडुन ॥ परिरावणनमानेते ॥ ३३ ॥ शितापाहावयापाठवि
लिदुति ॥ निमार्गेगेलामारति ॥ नशाकदृष्टातकिंशितासति ॥ देखोनिक
पिनमितसे ॥ ३४ ॥ पुढंमुद्रिकठिउन ॥ दृष्टावरिवैसलाजाउन ॥ अपार
राक्षसिसोडुन ॥ पाडिल्यातेथंपराक्रमें ॥ ३५ ॥ मुद्रिकादेखोनशिता ॥ स
ति ॥ शोकसमुद्रिकेलिवस्ति ॥ मगपुढंयउनमारति ॥ प्रत्यभटलातेधवां ॥ ३६ ॥

॥ विजय ॥

॥ ३५ ॥

क्ष

(५५)

संगितलेसकळवर्तमान॥ मगक्षुधेचेमिसकसन॥ विध्वंशिलेजशोकवन॥
 जेविस्तिर्णयोजनद्वय॥ ३७॥ रावणपाठीविलादळमार॥ त्याचक्षुषिकेलासं
 वार॥ मारनिरावणचपुत्र॥ शक्रजितविटंबिला॥ ३८॥ मगम्याहनुमंताशि
 प्रार्थुन॥ ब्रह्मपाशिनेलेवाधोन॥ रावणशिशाब्दशस्त्रंकरन॥ संमेशिनिर्मि
 छिलेहनुमंते॥ ३९॥ मारतिमारवासर॥ हणनेपुष्पाशिलाविलावैश्वा
 वर॥ ओहंसहितवस्त्रंजपार॥ गुंडनियासाक्षेपे॥ ४०॥ पुष्पपेटतांचिसव
 र॥ उडेनिगेलावायुपुत्र॥ त्रितियभागलकनगर॥ जळिलेहणनलागतो॥ ४१॥
 परिनवलवर्तलेबहुत॥ लंकासुवर्णमयजालिसमस्त॥ धन्यतोलेकप्राणे
 शसुत॥ भोरसामर्थदाविले॥ ४२॥ मगसागरिपुष्पविशविले॥ पुन्हाचेतले
 आनकिचेदर्शन॥ जैसेवाळदेखतांस्मरन॥ जननिपाशियेतपै॥ ४३॥ अ

॥ श्रीराम ॥

॥ ४१ ॥

(5)

संपन्नवचितांचिसौमित्र ॥ अकृतं च नः शमगात्र ॥ रामेधावे निवायुपुत्र ॥ ह
र्दं धरितासप्रेमं ॥ ४४ ॥ धन्यधन्यते अंजनि ॥ असंख्यप्रसवलिषट्पुणि ॥ मा
सति चे मुखं कुर्वाकुनि ॥ निजास निरामवैसे ॥ ४५ ॥ किस्किदेशं रत्ने जाणे नि ॥
वेवं किमासति वरनि ॥ धन्यधन्यते मासतां जाज्वनि ॥ ब्रह्माऽभीरं लंकिर्तिने ॥
॥ ४६ ॥ धन्यधन्यते दिवस ॥ स्वामिस्वमुखं गे रवि विशेष ॥ लुछत्यापुढं सुधा
रसा ॥ स्वर्गभोगदि सर्वहि ॥ ४७ ॥ उपोऽस्मापपाणि ॥ हृदं धरि दिव्यम
णि ॥ श्रीरामासवाटं ले लेह्यणि ॥ किं जाव किं जाणिलिहनुमंते ॥ ४८ ॥ ह्यणे धन्य
मासति अहाका ॥ मजसेटविलिजवाकवाका ॥ तुशियाप्रतापं उजकला ॥
निराकमं उपजवधावि ॥ ४९ ॥ येवडासागर उलंघुनि ॥ जानकि बालाशिघे
उनि ॥ तुवां उपकार करोनि ॥ मजबांधिलं हनुमंता ॥ ५० ॥ हनुमंतं विचारि मनि ॥

॥ विजय ॥

॥ ४१ ॥

म्यंखुणआणितारितेचामणि॥यांलगिंकोदंडपाणि॥आनंदताबल्येन॥५१॥
 मज्झारचुकुपडलितेथे॥जरिशितत्तपैअणितोयेथे॥नरिआनंदेश्रावणारिसु
 त॥ब्रह्मांडभरितायेक्षणि॥५२॥मगह्मणेरधुनाथा॥क्षणेकधीरधरितुंआतां॥
 धेउनेयेतोंजनकहुहिता॥सकळराक्षसनेवहुनि॥५३॥हनुमंतैकरिताउड्डाण॥
 सावधजालारितारमण॥मारुतितुंआनकरावेगमन॥आहेकारणबहुपुढे॥
 ॥५४॥आवेशंनिद्यालामारुति॥लोनाटोचिकवणाप्रति॥मगस्वयेंधावोनिर
 धुपति॥आवरितहनुमंतते॥५५॥उपलोनियांअयोध्यानाथ॥निजस्कदिं
 वाहेहनुमंत॥क्षणेलंकेसनेतोंरधुनाथ॥रावणशिवधावया॥५६॥तोउन्मि
 अपतिअर्कसुत॥धावलाअंगदआणिजंखुवंत॥चौधेहनुमंतासजावरित॥
 परिसर्वथानाटोपे॥५७॥चौदासहिउचलुन॥उडोपाहेशिताशोकहरण॥

॥ श्रीराम ॥

॥ ५ ॥

⑥

अणोऽतकेचलंकेसजाउन ॥ असुरमर्दनयउंजातां ॥ ५५ ॥ वरकडन्यावेज्जरिवान्तर ॥ त
रिक्केसेनतरतिलसागर ॥ यालगिनिवडकथोरथार ॥ पांचजणनेउंहे ॥ ५६ ॥ पांचज
णशिउचलुन ॥ स्फुटिवाहेवायुनंदन ॥ किंतोपांचवष्टंगंचापुणे ॥ नगेतमशोभला ॥ ५७ ॥
किंपंचफळेलागलिंदृष्टाशि ॥ तिंजडनहेतिकदात्याशि ॥ किंउदयाद्रिवरितेजोरा
शि ॥ पांचसुर्यउगवले ॥ ५८ ॥ असोपेउनपांचडाण ॥ हनुमंतकरंपाहगमन ॥ या ॥ विजय ॥
वरिमंगकजनिचारमण ॥ हनुमंतशिबिनवित ॥ ५९ ॥ मारतिअेकप्राणसरव्या ॥
विराविनभलतिक्रिया ॥ नकराविनदाहवर्या ॥ श्रेष्ठचिअसेपुर्विहुनि ॥ ६० ॥ अ
सेविनवितरघुनंदन ॥ मगउत्तरिलेयांचहिजण ॥ जनकजापतिचेचरण ॥ सप्रमे
धरिलेमारतिने ॥ ६१ ॥ सुप्रिवजांबुवंतनकनिक ॥ वर्णितअनिकात्मजाचेव
क ॥ यावरितमालनिक ॥ सभाकरनिबैसला ॥ ६२ ॥ श्रीराममारतिप्रति ॥ ६३ ॥

॥ ५ ॥

(6A)

पुसेकैशिलंकेविगति॥ राक्षसवर्ततिकोणेरिति॥ कायवाचरतिपुण्यक्रिया॥ ६७॥ त्या
 वरिचातुर्यरत्नाकर॥ बोलेलोकप्राणेशकुमर॥ जैसाशक्रबणिजंगिराकुमर॥ करिवि
 विचारयकंति॥ ६८॥ तिनशेंगावेतंका॥ रेखूनदविलिरघुनायका॥ सकळसदना
 विसंख्या॥ गईठाईहविलि॥ ६९॥ जेकामराजपाषाण॥ त्याचिपांचलक्षगुहेजाण
 ॥ बाणिकयेकलक्षदौहिष्यमाना॥ विद्वंदिहिरें॥ ७०॥ तांब्रबाणिकांसेनिस्वळा
 पांचकोटिसदनेनिर्मळा॥ सुवर्णचिबलसबळा॥ शतकोटिराद्यवेद्रा॥ ७१॥ आ
 णिकहेमरत्निबाळछला॥ नवकोटिशिवाकयेतथा॥ तद्राभिषेकनैवेद्यबहुत॥ त्रि
 काळचालतिसाक्षेपें॥ ७२॥ असुरांचेग्राहिपुर्ण॥ अभिहोत्रेंवेदाध्यन॥ तद्राक्षमा
 कमुषण॥ विभुतचर्चनकरितिपें॥ ७३॥ मुरव्यरावणेंस्वसुध्दानेंपुर्ण॥ राकिलि
 वेदाचिखंडकसन॥ तपेंवाचरतिदारण॥ गईठाईराक्षस॥ ७४॥ जैसेबोलतांवा

॥ श्रीराम ॥

॥ ६३ ॥

(४)

युनंदन ॥ रघोत्तमजाला उद्धिद्ध ॥ बैशिलंका पुण्यपावन ॥ तेमजसर्वथानाटोपे ॥ ७५ ॥
बैसं जेथेंसत्कर्माचरण ॥ तेथें नार्हयशकिर्तिकळाण ॥ तरितेनाटोपेलंकाभुवन
॥ बहुप्रेल करितं हि ॥ ७६ ॥ तेव्हाक्षणेकरघुनाथ ॥ निवांतनबोलेचिंताक्रांत ॥
भोंवतेवान्नरतरस्छ ॥ पाहेंलागलेतक्रांति ॥ ७७ ॥ मग श्रीराम ह्मणे मारति ॥ तुवांसां ॥ विजय ॥
गितलिराक्षसं चिस्त्रिस्त्रि ॥ परिदयाक्षमा उपरति ॥ शान्तिविरक्तिमुरव्यजा ॥ ७८ ॥
शौचबाणिधर्मदान ॥ असुर करिति किंजुदन ॥ यावीरशितासंतापहरण ॥ काय
वचनबोलिला ॥ ७९ ॥ दयाक्षमा शुद्ध अंतर ॥ शौचदानधर्मपवित्र ॥ हे लंके मखि
अनुमात्र ॥ सर्वथा हि नसेचि ॥ ८० ॥ परमबधर्मनिदय असुर ॥ कपटचर्या तपेंकु
र ॥ अत्यंतरवदुस्वचार ॥ मद्यप्राशनै उन्मत्तजे ॥ ८१ ॥ मारतिचें वचन बैकोनि ॥ हा
स्थमुख पाहेवापपणि ॥ लंकाघेई नयचक्षणि ॥ पापरवाणि वसतिसे ॥ ८२ ॥ ॥

॥ ६३ ॥

(२१)

अंवरिस्समादयानहिं ॥ तिहतेनपेजकिशिकाई ॥ तोपढिनलाशास्त्रेसाहि ॥ तेव्य
 र्थकायवटवट ॥ ८३ ॥ किंनटामजितकमिन ॥ कोल्हटियाचेभुरतपुर्ण ॥ किं
 शचेनत्वज्ञान ॥ किंशांतिपुर्णमैदावि ॥ ८४ ॥ किंगतविधवेचेंयौवन ॥ किंयाम
 थिळरिचेंजिवन ॥ जानमिकाचेंरम्यसदन ॥ किंमुखमंडणवैश्येच ॥ ८५ ॥ किंग
 र्माधाचेंविशाळनयन ॥ किंबधिराचेंआमात्रकर्ण ॥ किंबजाकंठिचेस्सन ॥ किं
 वाजचरजाराचें ॥ ८६ ॥ किंसवचोराचेंगडकोट ॥ किंवाटपाड्याचिशांतिखोल ॥
 किंफासेपारीधिनिर्मळ ॥ निरंजनिबैसलास ॥ ८७ ॥ किंदाटलागलेंकटकवन ॥ किं
 दांभिकाचेंव्यर्थभजन ॥ तैसेंभुतदयेवांचुन ॥ ह्यानध्यानव्यर्थसर्व ॥ ८८ ॥ त्या
 चायेकांतव्यर्थदेख ॥ जैसेवईसवैसलेंमुषक ॥ शांतित्याचिजैसावक ॥ मळ
 धरावयावैसला ॥ ८९ ॥ असमजंगिचर्चितिसाचार ॥ जैसेउकरडालोकतिरकर ॥

॥ श्रीराम ॥

॥ ७१ ॥

(४)

ते अरंथात बैसले निरंतर ॥ १० ॥ तेणें तिर्थि केला वास ॥ तरिकाय थोडे
आहे तवायस ॥ किंतिर्थ जाळि मडक विशेष ॥ वटवटित बैसति ॥ ११ ॥ तेणें पाहिन्मचौ
सष्टिका ॥ तरि तिडका जाण व्यर्थ सकळा ॥ दये इमचे न सतां जिह्वाळा ॥ कळत्या
वीकळा जाणिजे ॥ १२ ॥ तेणें केले वेदाध्ययन ॥ जैसा स्वरावरि वाहिकांचें दन ॥ किं पडर
शिंदे विपुर्ण ॥ व्यर्थ जैशि फिर उनि ॥ १३ ॥ जैसे मद्यपियचें भाषण ॥ त्याचे वरपें गेंचि कि
लन ॥ किं गोरियांचें गायन ॥ शब्द जाणत सत्यांचें ॥ १४ ॥ जैसे वृदावन फळा ॥ वर
वरि दिसे निर्मळा ॥ किं कनक फळ दिसे रसळा ॥ फणसास मान भासत ॥ १५ ॥ अव
द्यावेळ चुनावा रितां ॥ परि नवनित केला न लागे हाता ॥ सिकतां हारळ शिजवि
तां ॥ मवाळ न केळलां ति ॥ १६ ॥ तुंबिणि चिबत्यंत कडु फळें ॥ शर्करेंत बुजिजे
बहुळाळा ॥ परिते जंतरिं गोड होईल ॥ कफांति हि घेईना ॥ १७ ॥ चुना मारुन वायसा ॥

॥ विजय ॥

॥ ७१ ॥

वकेंचजाताराजहंस॥ परिजायविष्टाशोधावयसा॥ व्यर्थवेषकायसा॥ ९८॥ याला
 गिअकंगहनुमंता॥ दयाहमाहृदईनसत्ता॥ जपतपध्यानसर्वथा॥ व्यर्थचिगे
 लेनिधारी॥ ९९॥ तरितेलंकावशिबसुर॥ करिनबवधियांचासंझार॥ अकृतां
 जानंदेलेवाब्बर॥ देलिमुमुःकारयेकदेचि॥ १००॥ असोब्रह्मपत्रमार्गवचिले॥
 तेथेविरंचिनेहोतेलिहिले॥ हनुमंतेंकादहनेकेले॥ परिनगरजाळेसुवर्णा
 चे॥ १०१॥ लेबैकेनियामात॥ आश्विनकरिकोशभासुत॥ मगजांबुवंताशिपु
 सतशहाहृतांतकेसाबसे॥ १०२॥ तुंबहुकाकिंचापुरषा॥ देखिलेअकिलेबहुवसा
 तोब्रह्मयाचाऔश॥ असोअध्याधिशिष्यानिपुसे॥ १०३॥ वयगुणेंतपेबहुत॥ कीड
 लअसेजांबुवंत॥ सांगेलपुर्विचारतांत॥ जैलेकावसलिनवतिपें॥ १०४॥ जै
 केलेगजेद्रोधारणा॥ वेगेंपरतलारमारमणा॥ तोकरजेडुनिसुपर्णा॥ क्षुधेने

॥ श्रीराम ॥

॥ ८ ॥

७

बहुव्यापला ॥ ५ ॥ मगबोले श्रीधर ॥ गजेद्रनकाचें कक्किवरघोर ॥ तें भक्षोनयेई सत्कर ॥
तो पक्षेंद्र उडाला ॥ ६ ॥ नक्र गजेद्राचि कक्किवरें होन्हि ॥ उरगारि घेउन गेला गगनि ॥
तो भेंग पक्षिये उनि ॥ विभागमागे रवंगेंद्रां ॥ ७ ॥ गजेद्रनलागतां यकक्षणा ॥ भें
गाचा घेतला प्राण ॥ जंबुविशारवा पाहोन ॥ वैनतात नय वैसला ॥ ८ ॥ तो साठ ॥ विजय ॥
सहस्रकाल रिविल्यध विनले ॥ देहिं तें शारवें तें घेतलें टागुन ॥ असणा नुजे व
कलुं किले ॥ तो शारवा विशाळ मोडलि ॥ ९ ॥ रत्नयो जने शारवा घोर ॥ पडतां म
स पावतिल विप्र ॥ शारवा हातिगडन ॥ कश्यप पुत्र उडाला ॥ १० ॥ मगबोले
विष्णु वहुन ॥ ह्मणें मि कोण सजाउ शरण ॥ शारवा सोडितां ब्राह्म ॥ साठ सह ॥ ८ ॥
स्मरतिल ॥ ११ ॥ कश्यप वैसला अनुष्टनि ॥ त्यावरि पक्षें छाया धारिलि ग
नि ॥ तो वरुतें पाहिलो कुनि ॥ तो सुत संकटिं पीडितला ॥ १२ ॥ ते कं कश्यप ऋषिने प्रार्थुन ॥

(१५)

स्वातेउत्तरविलेब्राह्मण॥मगह्मणतपुत्रालागुण॥येथुनलेकगिरितवळिअसे॥१३॥
 तिवडापायत्याचातपळा॥तोचिहन्निक्कटाचळजाला॥गरुडेआहारतेथेचेतला॥टा
 केनिगेलाशाखाते॥१४॥त्यावरिमगतेलंकावसलि॥तेसुवर्णशाखाअसेत
 ळि॥हनुमंतेंलंकाजळिलि॥मुसवातलिशाखचि॥१५॥यालागिसुवर्णाचिलं
 काजळिलि॥जाणअयोध्यानायका॥जोवरजह्मणेहोअका॥मुहुर्लअसेयेसमई॥१६॥
 विद्यादशमिनक्षत्रश्रवण॥तेदिनिनिघातारधुनंदन॥पुर्विरंधुर्विरंधुचिमुहुर्ल
 पाडोन॥दिग्गजशिगेलेहोते॥१७॥सर्वपुपयोगतेक्षणि॥जयतिथिमाळाघेउन॥
 दशकंठरिपुचेचरणि॥घाललिमिठिलेथवा॥१८॥साहस्यसुग्रिवकिस्किंदेश्वर॥
 उठिलेअठरापदेंवान्नर॥बाहातरकेटितक्षविर॥त्याचानुपवरजाबुवंत॥१९॥
 छपनकोटिगोकागुंके॥भुभुकारदेलियकचिवेके॥दणणिलेउर्विमंडळ॥द्या

॥ श्रीराम ॥

॥ ९ ॥

(10)

केनिराजकंपतजसे ॥ २० ॥ काद्रव्यकुलभुषणतेका ॥ सरसाविखालेप्रिया ॥ यज्ञ
वराहदंतवरवा ॥ द्रढधरिलउचलुनि ॥ २१ ॥ कुर्मपष्टसरसाविला ॥ दिग्गजजालेभया
भित ॥ मंगळजर्जनिकंपत ॥ १११३ ॥ कारजैकोनिया ॥ २२ ॥ वनचरबाणिरेंचर ॥ भया
भितजालेथोर ॥ धउकतवाद्यांचागजर ॥ गोदबंवरकोदले ॥ २३ ॥ रथारढजैसा
सहस्रकर ॥ किंगरतगवरिश्रीकरधर ॥ हनुमंतस्वंधावरिरधुविर ॥ तैसाशोभला
तेकाकि ॥ २४ ॥ नंदिवरिर्कपूरगौर ॥ विजयवतिविरिसहस्रनेत्र ॥ जंगहस्वंधावीर
सौमित्र ॥ त्याचपीरशोभला ॥ २५ ॥ रथस्वंधाविराजेतमगिरि ॥ किंकुळाचकामाजि
कनकाद्रि ॥ किंगणामाजिस्मरारि ॥ तैसावान्नरिवेष्टिताश्रीराम ॥ २६ ॥ कामथाव
याक्षिरसागर ॥ मिळोनबालेसुरासुर ॥ तैसेचगर्जतवांळरा ॥ दृष्टपपंथेंचत्वि
ते ॥ २७ ॥ शाललमालदृष्टउपडिति ॥ कपिछत्राकारामावरिधरिति ॥ २८ ॥ २९ ॥

॥ विजय ॥

॥ ९ ॥

(१०A)

दृष्टपल्लवधेउनिहतिं॥चौरंवरित्तिहरिवरि॥२५॥दशयोजनेसेनासंदृजात्॥मार्गि
 वान्भरहृणतिरघुनाथा॥आहिरावणजाजिघालुपालथा॥जनकदुहिताभेटउतु
 ह्या॥२६॥येकवैलवान्भरविर॥मिचजाउनमारिनदृशवक्र॥येकवेदनलगताक्षय
 मात्र॥मोटबाधानवणिनिमि॥२७॥येकक्षणेस्वामिरघुनंदना॥जैसेवाटलेमा
 श्रियामना॥रावणाच्यानशिक्कवर्णा॥बादुनयेईनझडकरि॥२८॥येकक्षणेय
 कलाचजाईन॥द्विपंचहस्तपायखाडिन॥जैकानिसुरखावेरघुनंदन॥क्षणेहे
 सुरगणभवतरले॥२९॥दृष्टपल्लवधेउनिहतिं॥मार्गिकपिउंचलितिपर्वता॥कं
 दुकाजैसेसेलित॥धावतातिबावैश॥३०॥समुद्रतिरशिवालेभार॥भुभुः
 कारहेतिवान्भर॥तेणेभयामितसरितावर॥जालापरमतेकाळि॥३१॥जै
 सावेदवोललगेलाबहुत॥स्वरूपहेस्वानजालातटस्स॥तैसेवान्भरविरसम

॥ श्रीराम ॥

॥ १७ ॥

॥ १ ॥

स ॥ समुद्रतिरिस्छिरावले ॥ १२५ ॥ प्रासहोतां आत्मज्ञान ॥ १२६ ॥ ततमनायनिरसुन ॥
स्वयेप्रकाशअमृतधन ॥ होयसिंचनउपरीति ॥ १२७ ॥ अरवंडलागलिसेधार ॥
स्वेउनसेगंगाप्रसर ॥ श्रानपानमुनेधर ॥ नित्यनिरंतरकरिताति ॥ १२८ ॥ बहु ॥ विजय ॥
तपुण्याचियाजोडि ॥ प्रेमेहोयसुखदि ॥ मेहुनियांकाकिमुखप्रीति ॥ चुंबिति
ककापैचैतन्य ॥ १२९ ॥ किंराजहंसाचार्येउनहारि ॥ स्थिरावतिमानससरोव
रि ॥ मेदिनिवसनैचेतरि ॥ तेविकंपेकरितिरुस ॥ १३० ॥ दशयाज्ञनेजहुत ॥
सेनाउतरिलिवोतपोत ॥ असेलकेमाजिहसांत ॥ वर्ततावोचिपरिसापां ॥ १३१ ॥
कपिसहितजयोध्यविहारि ॥ पातलासागराचैपलतिरि ॥ बैशिखनिलंकेमा ॥ १३२ ॥
सरि ॥ राक्षसेद्रंभाकर्णिलि ॥ १३३ ॥ शक्रजितदिस्करकुमर ॥ प्रहस्तादिप्रथा
नधार ॥ यावरीविंशतिनेत्र ॥ बैसेविचारकरावया ॥ १३४ ॥ परमसंचितदिपंचवदन ॥

॥ १७ ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com